# उषा प्रियंवदा: जीवन परिचय

डॉ.गजानन वानखेडे

हिंदी विभाग प्रमुख

बलीराम पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, किनवट

# उषा प्रियंवदा का जन्म

उषा प्रियंवदा का जन्म 28 सितम्बर 1932 में कानपुर में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। जन्म स्थान को प्रमाणित करते हुए उषा प्रियंवदा लिखती है, "मैं कानपुर जैसे भीड़ भरे नगर में मिल की चिमनियों के धुएँ से मटमैल आकाश के नीचे पली हूँ। "3 इससे स्पष्ट होता है कि उषा प्रियंवदा का जन्म कानपुर में हुआ है एवं बचपन भी वहीं गुजरा है। जैसा मध्ययुगीन संतों के जन्म संबंधी विवाद रहे हैं। वैसे आधुनिक काल के साहित्यकारों के जन्म संबंधी विवाद नहीं दिखाई देता।

# उषा प्रियंवदा का बचपन

- उषा प्रियंवदा का बचपन कानपुर एवं लखनऊ में गुजरा। उषा प्रियंवदा के बाल्य अवस्था में ही उनके पिताजी का देहांत हुआ। बचपन से उषा प्रियंवदा को कहानियाँ पढ़ने और स्वयं की कहानियाँ गढ़ने की आदत-सी थी। ननिहाल कानपुर उषा प्रियंवदा को अप्रिय लगता था क्योंकि वहाँ पुरुषों के खाने के बाद ही महिलाओं को खाना मिलता था। छठी-सातवीं कक्षा में उषा प्रियंवदा ने चंदगकांता सन्तति, चाँद, माधुरी पत्रिकाएँ पढ़ी हैं। विविध उपन्यास एवं बंगला अनूदित किताबों में माधवी कंकण, शशांक, आनन्द मठ वैसे ही प्रेमचंद, कौशिक, भगवती चरण वर्मा आदि को उषा प्रियंवदा ने बचपन में ही पढ़ा था। इस साहित्य को पढ़ने से उषा प्रियंवदा को स्त्री अस्मिता के लिए लिखने की प्रेरणा मिली।

# परिवार

उषा प्रियंवदा अत्यंत समृद्ध परिवार से है। उषा प्रियंवदा ने अपने नाम के साथ माँ का नाम 'प्रियंवदा ' जोड. लिया। इसी कारण उनको साहित्य जगत में 'उषा प्रियंवदा ' नाम से पहचाना जाता है। पिता का नाम 'दामोदर प्रसाद सक्सेना ' है। पिता के देहांत के समय उषा प्रियंवदा की उम्र दो साल थी। उनके परिवार में माँ, दो बडी बहनें जिनमें श्रीमती कमला सहाय जिनके पति श्री यदुपति सहाय इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अग्रेंजी के प्रोफेसर थे। कामिनी हाँडा जिनके पति गुजरात में आर्मी मेजर थे तथा दो बडे. भाई, शिब्बन लाल और होरी लाल सक्सेना जिसमें से शिब्बन लाल सक्सेना अपने समय के जाने माने स्वतंत्रता सेनानी एवं बरसों तक लोकसभा के सदस्य रहे हैं।

# शिक्षा-दीक्षा

- उषा प्रियंवदा की आरंभिक शिक्षा वेदभारती स्कूल, बालिका विद्यालय, कानपुर में हुई। छात्र जीवन में उनपर सुमित्रानंदन पंत, बच्चन आदि का विशेष प्रभाव था। छात्र जीवन में वह अध्यापिकाओं की प्रिय छात्रा रही है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर तीन साल दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में अध्यापन करने के बाद फुलब्राइट स्कॉलरशिप पर अमेरिका प्रस्थान किया। जहाँ उषा प्रियंवदा ने ब्लूमिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरल स्टडी की। उषा प्रियंवदा अपनी काबिलीयत के बलबूते विस्कांसिन विश्वविद्यालय, मैडीसन में दक्षिणेशियाई विभाग में प्रोफेसर थी। संपूर्ण अध्ययन अंग्रेज़ी में करने के बाद भी उषा प्रियंवदा ने अपनी लेखन की भाषा हिंदी ही रखी। इससे स्पष्ट होता है कि उषा प्रियंवदा को हिंदी के प्रति लगाव है।

# साहित्य लेखन की प्रेरणा

- छात्रावस्था से उषा प्रियंवदा को साहित्य पढ़ने में बड़ा आनंद मिलता था। इसी अवस्था में उषा प्रियंवदा सुमित्रानंदन पंत से प्रभावित थी। इसलिए वे लिखती है, "शायद सुमित्रानंदन पंत से प्रभावित हुई हूँ। छात्रावस्था में बहुत शामे पंत जी के घर बीती है, शांती जोशी मेरी फ़िलासाफी की प्रोचार्य थी और सुमित्रानंदन पंत के हर अभ्यागत को पंत सुमित्रानंदन के हाथ की उगाई सब्जियाँ उपलब्ध रहती थी। "9 बचपन में कविता पाठ, पंत सुमित्रानंदन के घर की शामें, फिराक़ साहब का अप्रत्याशित लाड., श्रीपत जी का लेखन आदि बातों के संपर्क में उषा प्रियंवदा बाल्यावस्था से ही दी। सरिता, कल्पना, कृति आदि पत्रिकाओं से उषा प्रियंवदा ने जन्म लिया। सारांशत: कहा जा सकता है कि उषा प्रियंवदा के लेखन के प्रेरणास्रोत प्रेमचंद एवं सुमित्रानंदन पंत रहे हैं।

# वैवाहिक जीवन

- उषा प्रियंवदा अपने हुनर के कारण विस्कांसिन विश्वविद्यालय, मैडीसन में दक्षिणेशियाई विभाग में प्रोफेसर रह चुकी है। उषा प्रियंवदा के पति 'किम विल्सन' हॉवर्ड विश्वविदयालय में प्रोफेसर रह चुके हैं। दोनों एक दूसरे से सोला सौ मिल की दूरी पर रहते थे। किम के बारे में उषा प्रियंवदा लिखती है, "उनकी प्राध्यापकीय और आलोचकीय दृष्टि को मैं हलके से उनके विषय 'मध्यकालीन फ्रांसीसी साहित्य' की ओर इंगित कर देती हूँ। पाश्चात्य परिवेश में रहते हुए भी उषा प्रियंवदा पति की सेवा कर रही है। इससे स्पष्ट होता है कि भूमण्डलीकरण के इस दौर में उषा प्रियंवदा मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए स्वयं प्रयत्नशील है। उषा प्रियंवदा के साहित्य में टूटे.ते मानवीय मूल्यों के विघट.न के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा एक संवेदनशील लेखिका है।

अत: कहा जा सकता है, उषा प्रियंवदा का वैवाहिक जीवन अत्यंत सामंजस्यपूर्ण रहा है। पति-पत्नी उच्च विद्याविभूषित है।

# पुरस्कार एवं सम्मान

- उषा प्रियंवदा की उपलब्धियों में उनके कथा संग्रह एवं उपन्यास विविध विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में समाविष्ट है। पुरस्कारों में उषा प्रियंवदा को, पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यानारायण पुरस्कार मिला है। जो एक साहित्यिक पुरस्कार है। यह पुरस्कार भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा किसी ऐसे भारतीय मूल के विद्वान को दिया जाता है। जिसने विदेश में हिंदी भाषा या साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस पुरस्कार का प्रारंभ तामिलनाडु के हिंदी सेवी एवं विद्वान मोटूरि सत्यनारायण के नाम पर 1989 में हुआ था। इंडियान स्टडीज विभाग में संलग्न रहते हुए 1977 में उन्हें 'फुल' प्रोफेसर आफ इंडियन लिट्रेचर' का पद मिला। 2002 में अवकाश लेकर अब पूरा समय लेखन, अध्ययन और बागबानी में बिता रही है।

# कार्य

- उषा प्रियंवदा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है। तत्पश्चात् उन्होंने तीन साल तक अध्यापिका के रूप में दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में सेवा की 1961 में उन्हें फुलब्राइट छात्रवृत्ति मिली। उषा प्रियंवदा भले ही विदेश में रहती है लेकिन अंदर से भारतीय संस्कृति, भारतीय नैतिक मूल्यों आदि पर आस्था है। अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन के लिए वे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को गयी। जहाँ ब्लूमिल्टन, इंण्डियान में दो वर्ष पोस्ट डाक्टरल स्टडी की। बाद में विस्कासिन विश्वविद्यालय, मेडिसिन में अध्यापन कार्य करते समय उषा प्रियंवदा की शादी प्रसिद्ध भाषा विद्वान 'श्री किम विल्सन ' से हुई। आज-कल उषा प्रियंवदा अमेरिका के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त होकर अपने पति की सेवा कर रही है।

# उषा प्रियंवदा : रचना परिचय

- उनका पहला उपन्यास‘पचपन खंभे लाल दीवारें ’ है। जिसका का प्रकाशन वर्ष सन् 1962 है। इसमें नारी शोषण की कथा है। इस उपन्यास का बी. बी. सी लदन दवारा मंचन हुआ है। इस कारण यह उपन्यास काफी लोकप्रिय रहा है। दूसरा उपन्यास ‘रुकोगी नहीं राधिका ’ है। इसका प्रकाशन वर्ष सन् 1967 है। इसमें नारी के भटकन, अजनबीपन की कहानी है। इस उपन्यास से उषा प्रियंवदा को काफी मात्रा में प्रसिध्द मिली। ‘शेष यात्रा ’ उपन्यास का प्रकाशन वर्ष सन् 1982 है। इस उपन्यास में अन् के साहस एवं संघर्ष की कहानी है। ‘अन्तर्वंशी ’ उपन्यास का प्रकाशन वर्ष सन् 2000 है। जिसमें पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कारों के टकराहट में फँसी नारी का चित्रण किया है। साथ ही नारी के ‘स्व ’ की, अस्तित्व की विलुप्त खोज है। ‘भया कबीर उदास ’ उपन्यास का प्रकाशन वर्ष सन् 2004 है।

- धन्यवाद.....